युनिवर्सल लॉ - सभी जीवों पर समान रुप से लागू होनेवाली ब्रह्माण्ड की सनातन संचालन व्यवस्था

लेखक — CA जयेश शेठ | www.jayeshsheth.com (Mobile-98924 36799)

❖मैंने जो दिया था वही मुझे मिल रहा है। मैं जो दूसरों के लिये चाहूँगा वही मेरे साथ होगा।

❖मैं आत्मा हूँ। यह शरीर मुझे मिला हुआ किरदार है। आम तौर पर हमने जिसकी कामना की थी, वही किरदार हमें मिलता है।

❖मेरे साथ जो भी घट रहा है वह मेरे भूतकाल का ही प्रतिबिम्ब है। वह मेरे भूतकाल के कर्मों का फल है। मैंने जो कार्य मन-वचन-काय से न किया न करवाया न अनुमोदित किया है, वह मेरे साथ कभी भी घटनेवाला नहीं है।

❖इससे यह बात तय है कि मेरे साथ भूत, वर्तमान या भविष्य में कभी भी अन्याय न हुआ है न होगा। इसलिये मैं 'No Complaint Zone' 'शिकायतमुक्त भाव' में रह सकता हूँ। मेरे साथ जो भी होता है वह मेरे भूतकाल के कारण ही होता है। इसलिये 'मेरे साथ ही क्यों?' यह सवाल उठता ही नहीं।

❖मैं पुण्य करके और सप्तव्यसन (जुआ, शराब, मांसभक्षण, वेश्यागमन, चोरी, शिकार, परस्त्रीगमन या परपुरुषगमन), तथा कन्दमूल सेवन, रात्रिभोजन और अभक्ष्यभक्षण (अचार, मधु, अंजीर, मक्खन, इत्यादि) से मुक्त रहकर अपना सौभाग्य स्वयं निर्मित कर सकता हूँ। जिस प्रकार हम संसार में लाभ बढ़ाते हैं और नुक़सान घटाते हैं वैसे ही समझना है।

❖यह समीकरण याद रखना है — पाप = दु:ख, पुण्य = सुख।

❖मुझे दु:ख से भी फ़ायदा उठाने का तरीक़ा सीखना है।

❖मैं यहाँ सिर्फ देने के लिये आया हूँ — वह भी बिना किसी शर्त या अपेक्षा के। इस तरह देकर मैं अपना पिछला क़र्ज (loan) चुका रहा हूँ या फिर नयी निधि (fixed deposit) जमा कर रहा हूँ। दोनों परिस्थितियों में फ़ायदा मेरा ही है।

❖मुझे अपना फ़र्ज पूरे जोश से बग़ैर किसी अपेक्षा के निभाना है। बाक़ी सभी ऐसा करें यह आग्रह भी नहीं रखना है। हम सभी को अपने परिवार, मित्र, सहयोगियों, समाज और राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाना है।

❖मुझे अपने साथ सख्त और दूसरों के साथ मृदु/दयालू रहना है।

❖मेरे साथ जो भी हो रहा है वह अच्छे के लिये ही हो रहा है। अगर मैं यह मान लूँ तो हमेशा सकारात्मक बना रहूँगा।

❖लोगों के साथ चार प्रकार से पेश आना है —

1.**मैत्री भाव** — सभी जीवों से कल्याण मैत्री रखना। किसी से भी दुश्मनी न होने के कारण हमारी प्रसन्नता बनी रहेगी। मित्रों का भला चाहने से अपना भला सुनिश्चित होता है। इससे अपना वर्तमान और भविष्य दोनों सुधरते हैं।

2.**प्रमोद भाव** — दूसरे के गुण देखने से वे गुण मुझमें प्रकट होंगे। दूसरे के अवगुण देखकर स्वयं को सुधारना है।

3.**करुणा भाव** — पापी के प्रति करुणा रखना क्योंकि उन्हें ब्रह्माण्ड के नियम की जानकारी नहीं है। उससे अपनी प्रसन्नता बनी रहेगी और हम नये कर्मों के आस्रव से बच जायेंगे।

4.**माध्यस्थ्य भाव** — कोई प्रतिक्रिया नहीं। जब मुझे कोई आहत करे तब मुझे शान्त रहना है। मन में Thank you! Welcome! धन्यवाद! स्वागतम्!' करना। इस धन्यवाद स्वागतम् के भी तीन चरण हैं।

प्रथम चरण — पाप के उदय के कारण अपनी भूतकाल की भूलों के लिये माफ़ी माँगना। (Sorry! Sorry!).

द्वितीय चरण — नये कर्मों से बचने के लिये दोबारा ऐसी भूल कभी नहीं करूँगा यह तय करना। (Never again).

तृतीय चरण — सामनेवाले को अपने कर्मों को साफ़ करनेवाला और उपकारी मानकर मन में धन्यवाद देना। (Thank you!) इससे हमें उसके प्रति ग़ुस्सा, घृणा या तुच्छता के भाव नहीं आयेंगे। जिससे हम ग़ुस्सा, घृणा या तुच्छता के विषचक्र से बच जायेंगे। यह तीनों चरण हमारी प्रसन्नता के लिये रक्षाकवच हैं। इसलिये यह सिद्धान्त स्वागत योग्य है। (Welcome!) इस तरह मैं स्वयं को नकारात्मक भावों से बचाकर सकारात्मक सोच रख सकता हूँ। Thank you! अग्निशमन का काम करता है, इसलिये उसका उपयोग पहले करना है। तीनों चरणों का उपयोग प्रतिक्रमण की तरह बाद में करना है।

❖अपनी सोच समझपूर्वक बदलनी चाहिये, न कि बलपूर्वक। इससे अपनी प्रसन्नता भंग नहीं होती। इसी लिये हमारा मार्ग 'सहज योग' का है, 'हठ योग' का नहीं।

❖इस जीवन में मुझे अपने शरीर और मन का उपयोग कर संसार से मुक्ति हेतु सम्यग्दर्शन प्राप्त करना है। इसलिये हमारा पहला ध्येय सम्यग्दर्शन प्राप्ति का ही होना चाहिये।

❖आहार, मैथुन, भय, परिग्रह नामक चार संज्ञाऐं हमें संसारभ्रमण में उलझाये रखती हैं। इसे भलीभाँति समझकर उनके प्रति हमारी प्रबल आसक्ति को मन्द करना है।

❖सत्य हमारे भीतर है। उसे कहीं बाहर ढूँढने की आवश्यकता नहीं है। हमें स्वयं को अन्दर से बदलने की आवश्यकता है।

❖जिन्होंने सत्य प्राप्त किया हो वही मार्ग बता सकते हैं। वैसे लोग यश, कीर्ति, धन, वैभव, सम्मान, इत्यादि के पीछे नहीं भागते। वे सुर्ख़ियों से दूर रहकर सच्चे साधकों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन देते हैं।

❖सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु हमें सदैव सत्य स्वीकारने को तैयार (Ready to Accept) और स्वयं को बदलने को तैयार (Ready to Change) रहना चाहिये। सम्यग्दर्शन के लिये संसार की इच्छा, आकांक्षा, अपेक्षा छोड़ना नितान्त आवश्यक है। क्योंकि वही संसार का इंजन है। घर, परिवार, धन इत्यादि छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। संसार की इच्छा, आकांक्षा, अपेक्षा छोड़ने के लिये हमें स्वयं को हर दो घण्टे में जाँचते रहना चाहिये और बारह भावनाओं का चिन्तन करके सांसारिक इच्छाओं को मूल से निरस्त करना है।

❖मुझे स्वयं को बदलना है (जो कि आसान है), दूसरों को बदलने का आग्रह नहीं रखना है (जो कि मुश्किल है और निराशा, शोक, संताप, कष्ट इत्यादि का जनक है); दूसरों को तो हम सिर्फ प्रेरणा दे सकते हैं।

❖सभी संसारी जीवों के पास अनन्त काल तक रहने के दो ही स्थान हैं –

१. मोक्ष (अनन्त सुख)   २. निगोद (अनन्त दु:ख)

अगर मोक्ष नहीं मिला तो निगोद बिना किसी प्रयास के (by default) मिल जायेगा। इसलिये हमें मोक्ष के लिये ही सारे प्रयास करने हैं।

❖औरों से अपनी तुलना न करके अपने भूतकाल की तुलना अपने वर्तमान से करनी है और अपने वर्तमान को बेहतर बनाना है। इस तरह हमें दैनिक प्रगति (daily progress) करनी है।

❖यह नियम दिन भर प्रयोग में लायें और रात को सोने से पहले अपनी भूलों को जाँचकर उसे सुधारने का प्रयास करना चाहिये।

विस्तृत समझ के लिये कृपया संकलनकार द्वारा लिखित 'सुखी होने की चाबी' और 'सम्यग्दर्शन की विधि' पढ़ें।